भूमिका

''यदि तुरही का शब्द साफ़ न हो, तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा?'' कहकर पौलुस ने हमारे ही समय का वर्णन किया है। पिछली शताब्दी में हमने साम्प्रदायिक कलीसियाओं में बहुत से परिवर्तन होते देखे हैं। 1910 में एडिनबर्ग में हुई विश्व मिशनरी सभा में प्रमुख प्रोटेस्टेंट संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस सभा का विशेष नारा था ''इस पीढ़ी में संसार में सुसमाचार पहुंचाना।'' कुछ विरोध करने वाले भी थे, परन्तु प्रोटेस्टेंटवाद ने संसार में मसीह का प्रचार करने की अनिवार्यता को आवश्यक माना। खोए हुए संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर से दिया गया केवल वही एकमात्र ढंग था।

मात्र अठारह वर्ष बाद 1928 में, यरूशलेम में एक और विश्व मिशनरी सभा आयोजित की गई। इस सभा में अलग ही विचार था। सैकुलरिज़्म को सभी धार्मिक लोगों का शत्रु माना गया। वहां आए कलीसियाओं के प्रतिनिधियों से इस साझे शत्रु का सामना करने के लिए संसार के अन्य धर्मों के साथ मिलने का आग्रह किया गया।

चार वर्ष बाद 1932 में लेयमैन'स फॉरेन मिशन्स इन्क्वायरी के प्रकाशन से एक और उदारवादी व्यवहार गहरा हो गया। मिशनों के इस पुनर्विचार से इस विचार को बढ़ावा मिला कि प्रोटेस्टेंट मिशनरियों को दूसरे धर्मों के लोगों को परिवर्तित करने के लिए विदेशों में जाने के बजाय स्वयं मसीही कर्म करने चाहिए। यदि मसीहियत में पाया जाने वाला कोई विचार उन धार्मिक पड़ोसियों के लिए लाभदायक हो तो उसे उन्हें बताया जा सकता था। परन्तु कलीसिया के प्रतिनिधियों को उन्हें संसार के अन्य धर्मों से मिलने वाले सकारात्मक योगदान को वैसे ही स्वीकार करना चाहिए।

विशेष रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मसीह की कलीसियाओं के कुछ विश्वासियों में ऐसे ही व्यावहारिक परिवर्तन देखने में आए हैं। यह लहर नये नियम की कलीसिया की ओर मुड़ने और बाइबल के मसीह में सांत्वना और सुरक्षा पाने के एक प्रयास के रूप में आरम्भ हुई थी। परन्तु कुछ क्षेत्रों में, हम इस परखे हुए संदेश के अन्तिम रूप में अनिश्चितता को बढ़ता देख रहे हैं।

पौलुस की चेतावनी के प्रकाश में कि जब तक साफ ध्वनि न हो तब तक न तो कोई युद्ध के लिए तैयार होता है और न ही दूसरों को स्वयं-सेवक बनने के लिए आकर्षित कर

सकता है! नये नियम वाला मसीह ''शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु अधिकारी की नाईं उपदेश'' देने में प्रसिद्ध था (मत्ती 7:29)।

डॉ. ऍडी क्लोर ने इस पुस्तक में एक ''साफ़ ध्वनि'' का संदेश दिया है। यिमर्याह की तरह, जिसने अपने समय के लोगों से कहा था ''सड़कों पर खड़े होकर देखो, और पूछो कि प्राचीनकाल का अच्छा मार्ग कौन सा है, उसी में चलो'' (यिर्मयाह 6:16), डॉ. ऍडी क्लोर ने हमारा ध्यान ''मसीह के बुलाए हुओं'' के स्वभाव की ओर दिलाया है। समर्पित लोगों अर्थात पृथ्वी पर मसीह के राज्य की संगति के लिए बहुत से बाइबल के शीर्षकों की खोज करते हुए, उन्होंने नये नियम की कलीसिया की उत्तेजना और आवश्यकता की फिर से पुष्टि की है। एक बार फिर उन्होंने हमें परमेश्वर के मसीह की विलक्षणता के सामने और केवल उसके द्वारा मिलने वाले उद्धार के सामने खड़ा कर दिया है।

यह पुस्तक परमेश्वर के इस सेवक के जीवनभर का स्वाभाविक फैलाव है। हॉर्डिंग विश्वविद्यालय में अपने कार्यालय के निकट ही, मैं डॉ. क्लोर की प्रचार करने की और पुस्तकों द्वारा अथक सेवकाइयों से अवगत हूं। लोगों की पीढ़ियां जिन्हें मसीह के इस सेवक की सेवकाई से परमेश्वर के प्रेम और उद्देश्य का दर्शन मिला है, उठ कर उसे धन्य कहेंगी! बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के अनुसार संसार में कलीसिया की पहचान और मिशन के लिए परमेश्वर की योजना की ओर लौटने में दिलचस्पी रखने वालों के लिए *''कलीसिया'' के लिए परमेश्वर का नमूना* एक बहुमूल्य भंडार होगी।

डॉ. क्लोर ने न केवल समय के अनुकूल और पवित्र शास्त्र पर आधारित यह पुस्तक लिखी है बल्कि उन्होंने इस पुस्तक को इस ढंग से लिखा है कि इसे कलीसिया के लिए एक स्टडी गाइड (अध्ययन के मार्ग दर्शक) के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। प्रत्येक अध्याय के अन्त में चर्चा के लिए प्रश्न दिए गए हैं। पुस्तक के अन्त में, विस्तृत आयतें दी गई हैं जो चर्चा के अधीन विषयवस्तु को पूरी तरह से स्पष्ट करती हैं। मिशनरियों, प्रचारकों, बाइबल क्लास में पढ़ाने वालों, और केवल नये नियम की कलीसिया की ओर लौटने का दर्शन रखने वाले सब लोगों के लिए यह पुस्तक बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगी।

कार्ल जी. मिचल